प्रात: क्लास 14-3-68 ओमशान्ति पितश्री मन्मनाभव

ओमशान्ति। योग और ज्ञान अर्थात होली और धूलिया। एक रंग डालते हैं दूसरा गुलाल डालते हैं। पानी भी बच्चे जानते हैं बाबा हमको ज्ञान और योग सिखलाते हैं। योग कैसा यह तो बच्चे ही जानते हैं। हम पवित्र थे सो अभी अपवित्र बने हैं। क्योंकि 84 जन्मों का हिसाब तो चाहिए ना। यह है 84 का चक्र। मानेंगे भी वही जो 84 जन्म लेते हैं। तुम बच्चों को बाप द्वारा मालूम पड़ता है। अभी ऐसे बाप को भी मानेंगे तो बाकी किसको मानेंगे। बाप की मत मिलती है। कहते हैं हम कैसे जानें। न मानते हो तो चले जाओ। सभी में कोई ही मानेंगे। बाप शिक्षा भी कितनी क्लीयर देते हैं। तुम बच्चे ही मानेंगे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सभी एक रस नहीं मानेंगे। टीचर के पढ़ाई को सभी स्टुडन्ट एक रस नहीं मानेंगे। नम्बरवार कोई 20 मार्क्स लेते कोई कितने मार्क्स लेते हैं। कोई नापास हो पड़ते हैं। नापास क्यों होते हैं क्योंकि टीचर के मत पर नहीं चलते हैं। यहां तो अनेक मत मिलती है। यहां तो एक ही मत मिलती है। वह है वन्डर फुलमत। बच्चे जानते हैं बराबर हम ने 84 जन्म लिये हैं। बाप कहते हैं मैं जिस में प्रवेश करता हूं, यह किसने कहा? शिवबाबा ने। मैं किस में प्रवेश करता हूं, जिसको भागीरथ कहते हैं। वह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। तुम भी नहीं जानते थे। तुमको अभी समझाते हैं तुम इतने जन्म सतोप्रधान थे फिर सतो रजो तमो में नीचे उतरते आये हो। तुम्हारे में जो कुछ भी वह उतरती आई। अभी तुम यहां पढ़ने लिए आये हो। पढ़ाई है कमाई। सीक्रेट आफ इनकम। यह पढ़ाई बेस्ट। अज्ञान काल में कहेंगे आई०सी० एस० दी बेस्ट। इनको पगार (वेतन) भी बहुत मिलता है। अभी बाप बतलाते हैं अभी जो मैं तुमको पढ़ाता हूं दी बेस्ट है। इन से ऊंच पढ़ाई कोई होती नहीं। तुम जो 16 कला सम्पूर्ण देवताई थे अभी कोई गुण न रहा है। गाते भी हैं हम निर्गुण हारे में कोई गुण नहीं। सभी ऐसे ही कहते हैं। समझते हैं सर्व में भगवान है। देवताओं में भी भगवान है। इसलिए देवताओं के आगे भी बैठ जाते हैं मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नहीं। आपे ही बख्श तरस परोई। आप को ही तरस पड़ेगा। गाया भी जाता है बाबा सिलसिपुल है। महरबान है, हमारे ऊपर दया करते हैं। कहते भी हैं हे ईश्वर रहम करो। बाप को जानते हैं। अभी वही बाप तुम्हारे पास आया है। ऐसे बाप को जो जानते हैं उनको कितनी खुशी होनी चाहिए। बेहद का बाबा हमको हर 5000 वर्ष बाद फिर से राजधानी देते हैं। सारे विश्व की। कितनी अथाह खुशी होनी चाहिए। तुम जानते हो हम श्रीमत पर श्रेष्ठ से श्रेष्ठ बनते हैं। अगर श्रीमत पर चलते रहेंगे तो। आधा कल्प रावण के मत पर चलो हो। वह भी कितनी अच्छी मत समझानी देते हैं। जो गया भी सगड़ जाये। सीधा समझाते हैं। तुम ने 84 जन्म लिये हैं। पहले तुम सतोप्रधान थे अभी तमोप्रधान हो ना। यह है रावण-राज्य। रावण पर जीत हो तब ही राम-राज्य हो। भक्ति-मार्ग के शास्त्रों में तो फालतू बातें लिख दी हैं। कितनी ग्लानी आये हैं। बाप कहते हैं तुम अपने से भी ज्यादा ग्लानी करते हो। राम की सतोप्रधान सीता चुराई, फिर अग्नि में जलाये। बुरे से बुरे हुये। क्या-क्या बातें लिख दी हैं। कितनी कलंक लगाई है। तो बाप कहते हैं तुम हमारी और देवताओं की कितनी ग्लानी करते हो। मेरी फिर सब से ज्यादा ग्लानी करते हो। कछ, मछ, सुअरअवतार, कुत्ता क्या-क्या कह देते हो। बात मत पूछो। बाप डोराया देते हैं। अभी भी कलियुगी मनुष्य ऐसे ही कहते हैं। बाप का नाम गायन करने बदले ग्लानी ही करते रहते। बाप कहते हैं कितना अपकार किया है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। अभी यह समझानी दी जाती है। इन सभी बातों से निकलो। एक को याद करो। वह तो लोकमुक्त में तुम गुरु भी बने पैसे भी लूटे। गायन भी है सत कारंग तुरे 21 जन्म लिये। तब बारे कौन? बच्चों से ही तो प्रश्न पूछेंगे ना। तुम जानते हो मेरा ही नाम बागवान, खेवईया है। अर्थ न समझने कारण बहुत ग्लानी करते हैं। बेहद के बाप की बेहद की ग्लानी है। फिर बेहद का बाप उन्हीं को ही बेहद का सुख देते हैं। अपकार करने वालों का उपकार करते हैं। वह कोई समझते नहीं हैं कि हम अपकार करते हैं। बड़ी ही खुशी से कहते हैं ईश्वर

सर्वव्यापी है। अभी से तो हो न सके। हरेक को अपना पार्ट मिला हुआ है। यह भी तुम जानते हो। देवी-देवता का राज्य था तो और कोई राज्य नहीं था। भारत सतोप्रधान था। अभी है तमोप्रधान। बाप आये ही हैं नई सतोप्रधान दुनिया स्थापन करने। हो भी तुम बच्चों को ही मालूम है। सारी दुनिया को अगर मालूम पड़े तो यहां कैसे आयेंगे पढ़ने लिए। तो तुम बच्चों को अथाह खुशी रहनी चाहिए। खुशी जैसी चीज जैसा खुराक नहीं। सतयुग में तुम बहुत ही खुशी में रहते हो। देवताओं का खान-पान आदि बहुत सूक्ष्म होता है। खुशी बहुत रहती है। अभी तुमको खुशी मिलती है। तुम जानते हो हम सतोप्रधान थे। अभी फिर बाबा हमको ऐसी युक्ति बताते हैं। गीता में मामेकम् अक्षर है मनमनाभव। यह गीता स्पीकुड है। उसमें कृष्ण का नाम डाल सारा भुंसारा कर दिया है। यह है भक्ति मार्ग। बाप यह नालेज समझाते हैं। इसमें कोई झिट-पिट की बात नहीं। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह तमोप्रधान दुनिया है ना। कलियुग में ऐसी मनुष्यों का क्या हाल है। अखबार में पढ़ा था 42 वर्ष का आदमी है। उनको 45 बच्चे हैं। फिर इतने युगल बनाई, इतनी ट्रबल बनाई। सारा पोता मेल लिखा था कैसे रहते हैं। "कव2 चार बच्चे भी इकट्ठा पैदा होते हैं। खुद जीता है। बताता है मैं कैसे रहता हूं। हे भक्ति नोक आदि आदमी है। तो उनको क्या कहेंगे। कुत्ते। कुत्ते से भी जास्ती। बिच्छू टिन्डणमिश्रित हो गये हैं। सतयुग में एक धर्म एक भाषा एक राज्य होता है। एक बच्चा होता है। एक ही राज्य चलता है। यह ड्रामा बना हुआ है। तो यह ही सृष्टि चक्र का ज्ञानड्रामा है योग। ज्ञान की धूरियां और होली। मुख्य बात बाप समझाते हैं इस समय तमोप्रधान जड़-जड़ीभूत अवस्था है। विनाश सामने खड़ा है। अभी बाप कहते हैं तुम ने हमको बुलाया है कि हमको पावन बनाओ। तुम पतित बन गये हो ना। पतित-पावन मुझे ही कहते हो। अभी मेरे साथ योग लगाओ। मामेकं याद करो। मैं तुमको सब कुछ राईअ ही बताऊंगा। बाकी जन्म-जन्मान्तर तुम अराईटियां सुनते आये हो। सतोप्रधान से तमोप्रधान बन पड़े हो। बच्चों से ही बात करते हैं। पत्थ2 बच्चों से ही आकर मिलते हैं। तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान बनी है ना। किसने बनाई? विकार रूपी रावण ने। मनुष्य तो कितने प्रश्न पूछते हैं। माया ही खराब कर देती। शास्त्रार्थ करते हैं ना। तो आपस में लड़ पड़ते हैं। लाठी भी लगाते हैं। यहां तो बाप पतित से पावन बनाते हैं। इस में शास्त्र क्या करेंगे। पावन बनना है ना। कलियुग के बाद फिर सतयुग जरूर आना है। सतोप्रधान भी जरूर बनना है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान बनी है। तो शरीर भी तमोप्रधान मिलती है। सोना जिना कैरेट का होगा जैसे जेवर भी उतना ही कैरेट का बनेगा। याद पड़ती है ना। अभी तुमको 24 कैरेट सोना बनना है। अपने को आत्मा समझो। देही-अभिमानी बनो। देह-अभिमान में आने से तुम छी2 बन जाते हो। कोई खुशी न है। बीमारियां रोग आदि सब है। अभी पतित-पावन तो मैं ही हूं। मुझे तुमने बुलाया है। मैं कोई साधु-सन्त आदि नहीं हूं। तुमको कहते हैं गुरु जी का दर्शन करो। बोलो गुरु जी तो है नहीं। दर्शन से कुछ फायदा नहीं होता है। तो बाप बहुत सहज समझाते हैं। जितना बाप को याद करेंगे उतना तमोप्रधान से तमो, रजो, सतो, सतोप्रधान बनेंगे। फिर देवता बन जावेंगे। तुम यह फिर से देवता सतोप्रधान बनने लिए आये हो। बाप कहते हैं मेरे को याद करने से तुम्हारे कट निकल जावेंगे सतोप्रधान बन जावेंगे। पुरुषार्थ से ही बनेंगे ना। उठते, बैठते, चलते-फिरते बाप को याद करो। क्या स्नान करते, रोटी खाते बाप को याद नहीं कर सकते हो? अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो कट निकलते जावेंगे। और तुमको खुशी का पारा चढ़ेगा। कितना तुमको धन देता हूं। तुम आदि ही विश्व का मालिक बनने। वहां तुम सोने के महल बनावेंगे। इतने हीरे जवाहर आदि होंगे। तुम जानते हो भक्ति मार्ग में मंदिर बनाते उसमें कितने हीरे जवाहर आदि होते हैं। एक ने थोड़ी ही मंदिर बनाया होगा। और राजाओं भी तो बनाते होंगे। इतना सोना हीरे जवाहर कहां से आते हैं। अभी तो कुछ भी नहीं है। यह ड्रामा को तुम ही जानते हो कैसे चक्र फिरता है। यह बैठेगा भी उन्हीं की बुधि में जिन्हों ने सब से जास्ती भक्ति की होगी। नम्बरवार

...होंगे। वह पता पड़ेगा कौन बहुत सर्विस करते हैं। बहुत खुशी में रहते हैं। योग में रहते हैं व अवस्था पिछाड़ी में होगी। योग भी जरूरी है। सतोप्रधान बनना है। बाप आया हुआ है उससे वर्सा लेना है। यह भी कहते हैं बाबा तो हमारे साथ हैं। मैं सुन रहा हूं। तुमको सुनाते हैं तो मैं भी सुनता जाता हूं। किसको तो सुनावेंगे ना। ज्ञान-अमृत का कलश तुम माताओं को ही मिलता है। माताएं फिर सभी को बांटती हैं। सर्विस करती हैं। यह भी भक्ति है। सभी सीताएं हैं ना राम एक है। तुम सभी हो ब्राईड्स मैं हूं ब्राईडग्रुम। तुमको श्रृंगार कर ससुर घर भेज देता हूं। गाते भी हैं जो बापों का बाप, पतियों का पति है, एक तरफ महिमा करते हैं दूसरे तरफ गाली देते हैं। मुझे ठिकाना सब में ठोक देते हैं। शिव बाबा की तो महिमा अलग है। कृष्ण की महिमा भी अलग है। पोजीशन भी सभीका अलग2 होता है। यहां तो मिला कर सभीको एक हो कर दिया है। अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा। अभी तुम ब्रह्मा के बने हो। शिवबाबा के पोत्रे हो। पोत्रों का ही हक मिलता है। बाबा की प्राप्ती है नहीं। प्रापर्टी मिलती है हद की और बेहद की। तीसरा कोई होता ही नहीं जिससे वर्सा मिले। लौकिक और पारलौकिक से वर्सा मिलता है। यह है अलौकिक। इनको कुछ भी वर्सा नहीं है। यह कहते हैं हम भी उन से ही वर्सा लेते हैं। परलौकिक परपिता को ही सभी याद करते हैं। सतयुग में याद ही नहीं करेंगे। वहां तो सुख है ना। बाबा बहुत क्लीयर समझाते हैं। सतयुग में एक बाप। रावण राज्य में है दो बाप। संगम पर है तीन बाप। लौकिक -पारलौकिक और तीसरा है वन्डरफुल बाप। परन्तु इन से तो वर्सा मिलता ही नहीं है। ब्र इन द्वारा बाप देते हैं। इनको भी वहां से वर्सा मिलता है। ब्रह्मा को ग्रेन्ड गाते हैं। ग्रेट2 ग्रेन्ड फादर। शिव बाबा को तो फादर ही कहेंगे। सिजरा मनुष्यों का ब्रह्मा से ही शुरू होता है। इसलिए इनको ग्रेट2 ग्रेन्डफादर कहा जाता है। नालेज तो बहुत सहज दी है। तुम ने 84 जन्म लिये हैं। समझाने लिए चित्र भी हैं। इसमें कोई उल्टा सुल्टा प्रश्न करने की दरकार ही नहीं। पहले2 दो बाप की बात। ऋषि मुनियों से भी पूछते थे तो नेती2 कहते थे। अर्थात नहीं जानते। बाप ही आकर अपना परिचय देते ना। अभी तुम बेहद के बाप को जानते हो। तो कितना प्यार से उनको याद करना चाहिए। अभी धीरे2 तुम ऊपर चढ़ते जाते हो। ड्रामा अनुसार कल्प2 नम्बरवार कोई सतोप्रधान, सतो, रजो कोई तमो तमोप्रधान बनते हैं। ऐसा ही फिर पद भी वहां मिलता है। इसलिए बाप कहते हैं बच्चे अच्छी रीत पुरुषार्थ करो। सजा न खाओ। पुरुषार्थ जरूर कराते हैं। भल समझते हैं बनेंगे वही जो कल्प पहले बने होंगे। परन्तु पुरुषार्थ जरूर करावेंगे। जो नज़दीक वाले होते हैं पूजा भी अच्छी रीत वह करते हैं। पहले2 तो रीति ही पूजा करते हैं। भक्ति मार्ग में भी पहले मेरी पूजा फिर देवताओं की पूजा करते हैं। अभी तुमको देवता बनना है। तुम अपना राज्य योगबल से स्थापन करते हो। योगबल से तुम विश्व की बादशाही लेते हो। बाहुबल से कोई विश्व की बादशाही ले न सके। वह लोग भाईयों2 को भी आपस में लड़ाते रहते हैं। इतना जो बारूद बनाते हैं वह लड़ाई के लिए ही है ना। ज्यादा में भी सब देते रहते हैं। बारूद है ही विनाश के लिए। परन्तु यह भी किसकी बुद्धि में नहीं आता। क्यों कि वह तो समझते हैं कल्प की आयु लाखों वर्ष है। घोर-अंधियारे में हैं ना। विनाश हो जावेगा और वह घोर-अंधियारे कुम्भ करण की नींद में सोये रहेंगे। जागेंगे नहीं। तुम अभी जागे हो ना। बाप तो है ब्रह्म महतत्व ज्योत। नालेज-फुल। तुम बच्चों को भी आप समान बनाते हैं। वह है भक्ति यह है ज्ञान। ज्ञान से तुम कितना सुखी बनते हो। अन्दर में रहना चाहिए हम सतोप्रधान थे फिर 84 जन्म लेते तमोप्रधान बने हैं। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। बाप को याद करना है। इसको ही कहा जाता है बेहद का सन्यास। यह पुरानी दुनिया तो विनाश होनी ही है। नैचरल कलैमिटिज़ सब से बड़ा कारीगर है। उस समय तो तुमको खाना भी पूरा नहीं मिलेगा। तुम अपने खुशी के खज़ाने में रहेंगे। जानते हो यह सब खलास होना है। इसमें मुंझने की तो बात ही नहीं। बेहद का बाप कहते हैं मैं तुमको फिर से सतोप्रधान बनाने आया हूं। हमको बुलाया ही है एक आकर

सतोप्रधान पावन बनाओ। तो मेरा काम है तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाना। सो युक्ति बतलाते रहते हैं। बाकी 8 का ज्ञान तो बहुत ही सहज है। इसमें कोई प्रश्न उठ नहीं सकता। तुम चुप करके सिर्फ सुनते जाओ। कमाल है। ऐसा कौन होगा जो कहेगा हम सतोप्रधान है। क्या यह सतयुग है? मनुष्य तो कह देते स्वर्ग-नर्क है। अभी उन से क्या बैठ माथापच्ची करेंगे। वह तो उल्टी सुल्टी ही प्रश्न करेंगे। बाप से प्रश्न थोड़े ही किया जाता है। वह तो आप ही मुरली में सब समझाते रहते हैं। बच्चे समझते हैं आज तो मुरली में हमारी दिल की बातें भी बातें आ गई। सारा मदार मुरली पीं पर ही है। बाप कितना समझाते हैं माया फिर भी भुलाये देती है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। जो बाप के सिवाय और कोई बता न सके। तुम ही स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। परन्तु ब्राह्मणों की माला होती नहीं। रुद्र माला ही फिर विष्णु की माला बनती है।

अभी यह है रूहानी होली और धुलिया। योग और ज्ञान। यह पढ़ाई तो बहुत ही सहज है। परन्तु भूला देती है। धन आद के नशे में आ जाते हैं। बाप कहते हैं सभी से ममत्व मिटा दो। मुझे याद करो। तुम गाते भी आये हो आप आवेंगे तो हम सिर्फ आप को ही याद करेंगे। अभी बाप आये हैं तो तो फिर याद क्यों नहीं करते हो। भल गृहस्थ में रहो सिर्फ मामेकं याद करो। मैं परमधाम से आया हूं तुमको पढ़ाने। मैं कल्प2 इस तन में ही आता हूं। कहेंगे एक में ही क्यों? और यह तो ड्रामा अविनाशी बना हुआ है। इसमें थोड़े ही पड़ सकता है। अज्ञानी लोग थोड़े ही जानते हो तुम लोग कौन हो। तो तुम कहेंगे हम प्रजापिता ब्रह्मा कि डायरेक्ट बच्चे ब्रह्मा कुमार-कुमारियां हैं। वह ब्राह्मण थोड़े ही कहते हैं हम ब्रह्माकुमार है। उन से पूछो तुम अपने को ब्रह्मा का औलाद कहते हो। परन्तु ब्रह्मा कहां है। तुम तो मनुष्य के औलाद हो। तुम प्रजापिता ब्रह्मा के मुखवंशावली तो हो नहीं। तुम तो कुल वंशावली हो। जानते हैं ब्राह्मण इतने ही बनेंगे जितने देवता बनेंगे। होंगे। वह ब्राह्मण ऐसे थोड़े ही समझते हैं। तुम पूछ सकते हो अगर ब्रह्मा के औलाद हो तो ब्रह्मा कहां है। वह कब आया? बोलो गीता पढ़े हो? अपने धर्म को ही नहीं जानते हो। बाप ने कहा है मैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना करता हूं। तीन मूर्ति है ना। त्रिमूर्ति माना ही ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। यह किसके औलाद हैं? इनका रचयिता कौन? बता नहीं सकेंगे। क्योंकि सर्वव्यापी का ज्ञान बुद्धि बैठा हुआ है। बाप कहते हैं तुम मुझे याद करते2 पावन बन मेरे पास आ जावेंगे। जैसे मक्खियों का झुण्ड होता है ना। रानी के पिछाड़ी सब भागते हैं। तुम भी मकड़ी सदृश्य वापस जावेंगे। सतयुग में हैं ही थोड़े मनुष्य। कलियुग में ढेर मनुष्य। 5000 वर्ष की बात भी मनुष्य भूल गये हैं। तो फिर लाखों वर्ष की बात याद कैसे रह सकती। अपने को आत्मा समझो। आत्मा ही सतोप्रधान बनी है अभी फिर सतोप्रधान बनना है। बाप को याद करो तो अन्त मते सो गते हो जावेंगी। यह भी जानते हो सतयुग में हम थोड़े रहते हैं। बाकी सभी ऊपर में रहते हैं। इसलिए निराकारी झाड़ भी दिखाया है। निराकारी और फिर साकारी। बाप सा0 आद भी कराते हैं। तुम देखते हो सूक्ष्म फरिश्ते भी हैं। सम्पूर्ण ब्रह्मा के पास जाते हैं। बाबा भी इसमें आकर तुमको बहलाते हैं। मूल बात है बाप यहां आकर पावन बनाते हैं। सूक्ष्म वतन में तो कुछ भी काम नहीं करते हैं। पावन बनने से ही सूक्ष्म वतन में फरिश्ते बनेंगे। पावन बनने लिए मेहनत करनी है। इसलिए प्राचीन भारत का योग कहते हैं। बाप ने हीरे सी ब्राह्मण था। कृष्ण का नाम डालने से मुंझ पड़े हैं। यह भी ड्रामा बना हुआ है। वह है हठयोगी। तुम हो राजयोगी। हठयोग के लिए तो जयपुर में जाकर देखो। वह है हठ का सन्यास। यह है बेहद का सन्यास। बाप समझाते रहते हैं यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है। शादी कर बच्चे आद पैदा करेंगे परन्तु उनको तो मिलना ही कुछ नहीं है। इतना समय नहीं है। फिर लौकिक पारलौकिक दो नौ वर्षों यहां देते हैं। यह भोगआद लगाना, यह सब है चिट-चैट। इन में न ज्ञान है न विज्ञान है। ड्रामा में यह सब नूंध है तब ही होता है। अच्छा बच्चों को रूहानी बापदादा याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते। नमस्ते।

-: : ओमशान्ति : : - *-: : शिवबाबा याद है? : : -*